नेताजी और उनकी मृत्यु : एक रहस्य विषय पर आयोजित परिसंवाद।

वर्धा, : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में संस्कृति विद्यापीठ और राष्ट्रसाधना विचार मंच के संयुक्त तत्वावधान में नेता जी से जुड़े तमाम अनसुने पहलुओं पर आजाद हिन्द सेना के 63 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में मुख्य वक्ता के रूप में लेखक अनुज धर ने कई तथ्यों के साथ अपनी बात रखी।

अनुज धर जी एक भारतीय लेखक, साहित्यकार और पत्रकार है। श्री अनुज जी नेताजी के विशिष्ट अध्यता है। और नेताजी की रहस्यमई मृत्यु पर कई पुस्तकें प्रकाशित की है। हाल ही में प्रकाशित हिंदी फ़िल्म "दी ताशकंद फाइल" से भी जुड़े हुए हैं। अपने अध्ययन में प्राप्त साक्ष्यों से प्रमाणित करते हैं कि कथित विमान दुर्घटना के बाद

नेता जी कई वर्षों तक जीवित रहे। अनुज जी "मिशन नेताजी" नाम से एक गैर लाभकारी संस्था चलाते हैं। जिसका उद्देश्य नेताजी से संबंधित दस्तावेजों का संरक्षण कर सच्चाई को सामना लाना है।

हिंदी विश्वविद्यालय स्थित कस्तूरबा सभागार में कहा भारत की स्वतंत्रता के लिए आजाद हिंद फौज का नेतृत्व करने वाले सुभाष चंद्र बोस की मौत एक रहस्य बनी हुई है। देश की आम जनता जानना चाहती है कि आखिर नेताजी सुभाष बोस किन परिस्थितियों में गायब हुए या फिर उनकी मौत प्लेन क्रैश में हुई? अनुज धर ने यह कहा कि देश के लिए मर मिटने वाले महानायक नेताजी सुभाष चंद्र बोस की अस्थियों का डीएनए की जांच क्यों नहीं हुई?

अपने व्याख्यान में उन्होंने बताया कि जब हादसे के बारे में इंटेलीजेंस एजेंसी ने हबीब-उर-रहमान से बातचीत की तो उनका कहना रहा कि 17 अगस्त 1945 को वह विमान से नेताजी के साथ सिंगापुर से बैंकाक होते हुए टोक्यो जा रहे थे। विमान जापान में भोजन आदि के लिए रुका था, उसके बाद उड़ान भरने पर वह रनवे के पास क्रेश हो गया। जब नेताजी ने आग से घिरे दरवाजे से निकलने की कोशिश की तो उनके शरीर में आग लग गई थी। आग बुझाने के प्रयास में हबीब के हाथ भी बुरी तरह जल गए थे। अस्पताल में रात लगभग नौ बजे नेताजी

ने अंतिम सांस ली थी। अंतिम संस्कार के 25 दिन बाद हबीब नेताजी की अस्थियों को लेकर जापान पहुंचे।

उन्होंने कहा कि यह भी माना जाता है कि नेताजी की मौत विमान हादसे में नहीं हुई थी, वे गुमनामी बाबा के

रूप में जीवन जीते रहे। गुमनामी बाबा की मौत 1985 में हुई थी।

अनुज धर ने बताया कि उन्होंने 2005-06 में प्रधानमंत्री कार्यालय से मांग की थी कि उन्हें वह दस्तावेज उपलब्ध

कराए जाएं, जिसमें सोवियत संघ में सुभाष बोस के होने की जांच की गई। पीएमओ ने यह कहकर दस्तावेज देने

से इंकार कर दिया कि इससे विदेशी ताकतों से हमारे संबंधों पर प्रतिकूल असर पड़ेगा। सरकार ने एक आरटीआई के जवाब में इस राज पर से पर्दा उठाया है। आरटीआई के जवाब के अनुसार 18 अगस्त 1945 को नेताजी की मौत ताइवान में हुए विमान हादसे में हुई थी।

लेकिन उनका कहना है की कई साक्ष्य इस और इशारा कर रहे हैं कि नेताजी भारत में उत्तर प्रदेश राज्य के कई जगहों पर गुमनामी बाबा के रूप में जीवन व्यतीत किए। जब वह जीवित थे। वहां किसी से भी उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से बातचीत नहीं की ना ही किसी को अपना चेहरा दिखाया। कुछ एक को छोड़कर यह माना जाता है कि उनके जीते जी यह किसी को पता नहीं था कि गुमनामी बाबा ही नेताजी सुभाष चंद्र बोस है। यह सभी राज उनके मृत्यु के बाद खुला कि गुमनामी बाबा ही नेताजी सुभाष चंद्र बोस है। क्योंकि वह जिस जगह रहते थे वहां पर नेताजी के द्वारा निजी प्रयोग में लाए जाने वाली वस्तुएं नेताजी के माता पिता की छवि और अन्य कई ऐसी दस्तावेज वहां से मिले। जिससे यह कहीं ना कहीं प्रमाणित होता है कि गुमनामी बाबा ही सुभाष चंद्र बोस थे। साथ ही साथ वहां पर कई दस्तावेज में उनके हस्ताक्षर भी नेताजी से मिलते है। जो कि यह दावा करता है कि गुमनामी बाबा ही महानायक नेताजी सुभाष चंद्र बोस थे।